डॉ॰ अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा

हिन्दी रचना

कवि परिचय

कबीरदास

प्रश्न: भक्तिकाल के कवि कबीरदास का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर

कबीरदास जी की जन्म तिथि के बारे में निश्चित रूप से किसी को कुछ पता नहीं। फिर भी एक अनुमान के अनुसार उनका जन्म वाराणसी में सन् 1398 ई॰ में हुआ था। कहा जाता है कि उनके माता-पिता के विषय में भी किसी को कुछ नहीं मालूम। वह काशी के लहरतारा तालाब के निकट पाये गए थे जिसका लालन-पालन नीरू और नीमा नामक दम्पति ने किया था। वे जुलाहा परिवार से आते थे इसलिए कबीर भी खुद को जुलाहा ही मानते थे।

कबीर बचपन से ही तीव्र बुद्धि के थे। उन्हें साधु-संतो की बातें अच्छी लगती थी जिन्हें वह तत्काल ग्रहण कर लेते थे। कबीर के गुरु का नाम स्वामी रामानंद थे जो भगवान श्री राम के अनन्य भक्त थे। कबीर ने उन्हीं से दीक्षा ली थी। स्वामी जी विशिष्टद्वैत मत की परंपरा के संत थे। उन्होंने छुआछूत मिटाने की दृष्टि से मानवता के संरक्षक राम के सगुण भक्ति का संदेश देकर रामावत संप्रदाय चलाया किन्तु निर्गुण उपासना की भी छूट दी।

कबीर ने स्वामीजी के सम्पर्क से पहले वैष्णव धर्म को समझने की कोशिश की किंतु वैष्णव धर्म के कर्म-कांड और पाखण्ड देखकर उनका मन बदल गया और उन्होंने निर्गुण को अपनाया। आगे चलकर उन्होंने निर्गुण पंथ की स्थापना की। उन्होंने ईश्वर के सगुण रूप का विरोध करते हुए स्पष्ट रूप से लिखा-

दसरथ सुत तिहुँ लोक बखाना।
राम नाम का मरम है आना।

इसका स्पष्ट मतलब था कि जिस राम को पूरी दुनिया अवतार के राम मानती थी कबीर के मत इससे

P.T.O

पूरी तरह भिन्न थे। कबीर का मानना था कि दशरथ के पुत्र राम ईश्वर के अवतार नहीं हैं। कबीर के राम कहीं इससे ऊपर थे। उनके अनुसार उनके राम पूरे ब्रह्माण्ड में व्याप्त, अगम और अगोचर हैं। उनके राम को खुली आँखों से नहीं देखा जा सकता। इस प्रकार उन्होंने निराकार सर्वव्यापी ब्रह्म खोज की जो सारे जगत के पालनहार और परमपिता हैं। कबीर ने केवल अखिल ब्रह्म की खोज की वरन् उन्होंने समाज के अंधेरे गर्त में पड़े उन लोगों को जगाने का भी कार्य किया जो रूढ़ियों से शोषित और पीड़ित थे। उन्होंने जनता की भाषा में ही अपना उपदेश देना शुरू किया। कबीर ने सामाजिक क्षेत्र में कर्मकांड, पूजा-व्रत एवं छुआछूत की भावना पर करारा प्रहार किया। उन्होंने भारतीय समाज के विसंगतियों को उजागर करने का प्रयास किया। उपेक्षित और गरीब लोगों के बीच में जाकर उनकी चेतना को जगाने का काम किया। वे ईश्वर के प्रति जो ढोंग था उससे बचना सिखलाते थे। उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम ने अन्य धर्मों से उठकर लोगों को मानवता का पाठ पढ़ाने की कोशिश की।

धार्मिक क्षेत्र में हिन्दू-मुस्लिम के बीच जो बैर की भावना थी उसे मिटाने का काम किया। उन्होंने हिन्दुओं की मूर्ति-पूजा, तीर्थ-व्रत, तिलक-छापा, जनेऊ तथा मुसलमानों के रोजा, नमाज सुन्नत आदि की खुलकर भर्त्सना की। उन्होंने साफ कहा कि ऊपरी कर्मकांड से ईश्वर को सहज भक्ति नहीं की जा सकती। उसके हृदय का पवित्र होना जरूरी है —

करि का मनका डारि दे।
मन की मनका फेर।

कबीर संत थे। उनकी वाणी में ईश्वर का निवास था। अनपढ़ होते हुए भी उन्हें सभी शास्त्रों का ज्ञान था। उन्होंने गुरु को गोविन्द से अधिक बताया। वे एक सच्चे साधक थे। उनका जीवन सदाचार और परोपकार से भरा था। उन्हें ईश्वर को प्राप्त करने के लिए आत्मा के शुद्धि एवं सद् आचरणों पर जोर दिया। आर्थिक स्वावलंबन हेतु की सेवा ही उनका धर्म था।

Scanned with CamScanner